Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बंगाल की भूमिका : राजा राम मोहन राय

डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, सहायक प्राध्यापक
भवंस विवेकानंद कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद केंद्र- 500 094
Mail ID : drsuparna.mukherjee.81@gmail.com

1. **प्रस्तावना**- भारत के मानचित्र के पूर्व में पश्चिम बंगाल नाम का एक राज्य दिखाई पड़ता है। यह राज्य अपनी संस्कृति, खानपान, साड़ी, गहने, उर्वरा भूमि, सुंदर महिलाएं, चाय के दुकानों पर सिगरेट-समोसे के साथ विभिन्न विषयों पर आलोचना करनेवाले भद्रोलोकों (बुद्धिजीवियों), दुर्गा पुजा के पंडाल और काली पुजा की बली प्रथा आदि के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। **'CITY OF JOY'** के नाम से भी यह शहर प्रसिद्ध है। मुगल हो या ब्रिटिश सबकी पहली पसंद यह राज्य विभिन्न समयों में विभिन्न कारणों से रहा है। इसी कारण से भारत के मानचित्र में इस राज्य का अपना अलग अस्तित्व रहा है। प्रस्तुत आलेख में आगे **'भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बंगाल की भूमिका'** इस विषय पर चर्चा करते हुए बंगाल की भूमि में ही जन्में **राजा राम मोहन राय** के व्यक्तित्व और उनके द्वारा देशोद्धार के लिए गए कार्यों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। आशा है यह आलेख जैसे-जैसे समाप्ति की ओर बढ़ेगा वैसे-वैसे अपने उद्देश्य को भी सफल बना सकेगा।

2. **बंगाल का इतिहास**- बंगाल का इतिहास 4000 साल पुराना है। प्राचीन काल में बंगाल में सुहमा, पुंड्रा, वंगा, हरिकेला और समताता नाम के दूसरे राज्य थे। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में बंगाल ने नंद साम्राज्य के शासनकाल को देखा। इसके बाद बंगाल ने गंगारिदाई के शक्तिशाली शासकों के शासन को देखा। इन शासकों के कारण से ही सिकंदर महान को भारतीय उप महाद्वीप को छोड़कर जाना पड़ा था। पाल वंश के शासन काल को बंगाल के इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। इस समय सदियों के गृहयुद्ध के बाद बंगाल में स्थिरता और समृद्धि आई थी। 12 वीं शताब्दी तक बंगाल ने बौद्ध और

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

हिन्दू वंश के शासन को देखा। देव वंश के शासन काल में बंगाल ने रचनात्मक उत्कृष्टता को देखा। 13 वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने पश्चिमी और उत्तरी बंगाल के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की और बंगाल में पहला मुस्लिम राज्य स्थापित हुआ। इसके बाद लगभग 320 से भी अधिक वर्षों तक बंगाल ने इस्लामी शासन को देखा। बंगाल सल्तनत की स्थापना मुर्शिद कुली खान ने की थी। उन्होंने 1717 के आसपास बंगाल को स्वतंत्र घोषित किया। मुर्शिद कुली खान के बचपन का नाम सूर्य नारायण मिश्रा था। 1757 में बंगाल ने पलासी के युद्ध को देखा है। साल 1947 में भारत के विभाजन के बाद पहले भारत का भारत और पाकिस्तान के रूप में विभाजन और फिर 1971 के युद्ध के बाद जब पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्र होकर बांग्लादेश बना तब इसी का पश्चिमी हिस्सा **पश्चिम बंगाल** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1 नवंबर 1956 को पश्चिम बंगाल भारत संघ का आधिकारिक रूप में अंग बना।

2.1 **भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बंगाल की भूमिका**- बंगाल की चर्चा हो और स्वतन्त्रता संग्राम की चर्चा न हो यह कैसे हो सकता है। हाँ, यह सही बात है कि स्वतन्त्रता पाने के लिए अखंड भारत के प्रति एक मनुष्य ने अपना सब कुछ न्योच्छावर कर दिया था और यह भी सत्य है कि बंगाल इन बलिदानियों को अपना मजबूत नेतृत्व लगातार प्रदान करता रहा। नीचे कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया जा रहा है-

i- **1763-1800** तक बंगाल ने संन्यासी विद्रोह का नेतृत्व किया। सबसे पहले यह किसान विद्रोह था और इसकी शुरुवात हुई थी ढाका (अब बांग्लादेश) से। फिर इन विद्रोहियों की संख्या 50 हज़ार हो गई और तब यह केवल बंगाल का आंदोलन न रहकर सम्पूर्ण भारत का आंदोलन बन गया।

ii- **'नील विद्रोह'** का केंद्र रहा बंगाल। यह एक अहिंसक आंदोलन था। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि इस 'नील विद्रोह' से प्रभावित

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

होकर ही गाँधी जी ने स्वयं को अहिंसक सत्याग्रह के अग्रदूत के रूप में विकसित किया।

iii- बंगाल की **'अनुशीलन समिति'** और **'युगांतर'** (जो अग्नि युग/आग का युग कहलाए) दो मुख्य संगठन थे। बंगाल ने संपूर्ण भारतियों को हथियार और बम बनाने का प्रशिक्षण देने के लिए भूमिगत सेल बनाने का कार्य किया।

iv- एम. एन. रॉय के नेतृत्व में वामपंथियों ने समाजवादी नीतियों के साथ-साथ लोकतान्त्रिक, नागरिक, स्वतंत्रतावादी राजनीति के विकास को भी प्रभावित किया। यह कार्य शुरू तो हुआ था बंगाल से लेकिन फिर यह संपूर्ण भारत में फैला और भारत के सभी राज्यों ने इस सिद्धांत को कमोबेश अपनाने का प्रयास किया।

v- बंगाल ही वह पहला राज्य है जिसने स्वदेशी आंदोलन को आयोजित किया और बंगाल के आह्वान पर संपूर्ण भारत कूद पड़ा विदेशी बहिष्कार आंदोलन में। भारत के इतिहास ने बंगाल के नेतृत्व में एक नए अध्याय की शुरुवात को देखा।

vi- **'वंदेमातरम'** केवल एक गीत नहीं है। देश ही देवी माता है। इस संबोधन के साथ, इस मनोभाव के साथ जब बंकिमचंद्र चैटर्जी के इस गीत को स्वाधीनता सेनानी गाते थे तब अंग्रेजों की सेना भय से काँपती थी। राष्ट्रीय चेतना को धार्मिक चेतना के साथ जोड़ने का काम सबसे पहले बंगाल ने ही किया।

ये तो केवल कुछ उदाहरण है। खुदीराम बोस से लेकर सुभाष चंद्र बोस तक और नीताई गौड़ से लेकर ईश्वर चंद्र विद्यासागर तक न जाने कितने महापुरुषों ने बंगाल के इतिहास को स्वर्णिम अक्षरों से लिखने के लिए अपना सर्वस्व गँवा चुके हैं। इसी कड़ी में राजा राम मोहन राय के जीवन और उनके कार्यों को देखना समीचीन है।

3. राजा राम मोहन राय का भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान-

3.1 राजा राम मोहन राय का संक्षिप्त परिचय- राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1777 ई. को बंगाल के हुगली जिले के 'राधा नगर' ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम रमाकांत राय और माता का नाम

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

नरिणी देवी था। वैसे तो राम मोहन राय के परिवार की पदवी बैनर्जी थी। उनके परम पितामह कृष्ण चंद्र बैनर्जी बंगाल के नवाब के पास कार्यरत थे। स्थानीय शासक की सेवा के पुरस्कार के रूप में 'राय' उपाधि से सम्मानित किया गया था। तब से इनके परिवार की पदवी बैनर्जी से राय हो गई। राम मोहन को भी 'राजा' की उपाधि से दिल्ली के मुगल सम्राट द्वितीय ने तब प्रदान की थी जब उन्होंने ब्रिटिश सम्राट के सामने अपना मामला प्रस्तुत करने के लिए इंग्लैंड भेजा गया था। उन्होंने उस समय राजदूत के रूप में इंग्लैंड की यात्रा की थी और उसी समय से वे 'राजा राम मोहन राय' कहलाने लगे। उनकी मृत्यु 20 सितंबर, सन् 1833 ई. में हुई।

3.2 भारत में पुनर्जागरण के सच्चे प्रतिनिधि राजा राम मोहन राय- राजाओं, नवाबों, अफसरों के साथ संबंध रहने के बाद भी उनसे विभिन्न सम्मान और पुरस्कार प्राप्त करने के बाद भी राम मोहन राय सच्चे भारतीय थे। 14 वर्ष की आयु में संस्कृत सीखने के लिए उन्हें वाराणसी भेजा गया। उन्होंने वेदांत, उपनिषद का गहन अध्ययन किया। इसी के परिणामस्वरूप मूर्ति पुजा से उनका विश्वास उठ गया और उन्होंने हिन्दू धर्म को समस्त कर्मकांडों से मुक्त करने का प्रण लिया। वी. पी. वर्मा ने लिखा है, 'वे एक ऐसी आत्मा थे, जिसने अपने को दूसरों के लिए अर्पित कर रखा था। उनके मन मेन मनुष्य तथा ईश्वर के लिए अगाध प्रेम था। वे सच्चे ईमानदार थे। उन्होंने भारतीय समाज में प्रजातन्त्र के महान आदर्शों स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व को स्थापित करने के लिए आजीवन सक्रिय रूप से प्रयासरत रहे। वे बंगाली पुनर्जागरण के पथ-प्रदर्शक तथा प्रथम अधिवक्ता थे'।[1]

शिक्षा के बिना देशोद्धार नहीं हो सकता यह उनका दृढ़ विश्वास था। वे आधुनिक शिक्षा के सबसे प्रारंभिक प्रचारकों में से एक थे। सन् 1817 में कलकत्ता में उन्होंने हिन्दू कॉलेज की स्थापना में उन्होने डेविड हेयर

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

को अपना संपूर्ण समर्थन प्रदान किया। इसी के साथ-साथ उन्होंने अपने खर्च से सन् 1817 ई. में एक अंगेजी स्कूल चलाया जिसमें अन्य विषयों के साथ ही साथ यान्त्रिकी और वाल्तेयर के दर्शन की पढ़ाई होती थी। उन्होंने सुसभ्य परिवार में अपनी भाभी को सती होते हुए देखा था। यह उनके लिए मर्मांतक घटना थी कि वे भाभी को बचा नहीं सके लेकिन इस घटना ने उन्हें स्त्री स्वतन्त्रता तथा नारी कल्याण के लिए और भी अधिक दृढ़ संकल्पी बना दिया। 19वीं शताब्दी में जब बंगाल के साथ-साथ संपूर्ण भारतीय समाज बल विवाह, सती प्रथा, कन्यावध, विधवाओं के प्रति अत्याचार जैसी कुप्रथाओं ने खोखला कर दिया था उस समय राजा राम मोहन राय देवदूत के समान भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए आगे बढ़ आए थे। वे मानवता के उपासक थे। इसी उपासना को केंद्र में रखकर उन्होंने 'ब्रम्ह समाज' की स्थापना की। 'वे समस्त मानव जाति को एक ही विशाल परिवार तथा विभिन्न जातियों प्रजातियों तथा राष्ट्रों को उस महान परिवार की शाखाएँ मानते थे। वे मनुष्य को सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा कानूनी बंधनों से मुक्त करना चाहते थे। उन्होंने विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के मध्य शांति और सहयोग की स्थापना के लिए एक विश्व संघटन के निर्माण का स्वप्न देखा। संपूर्ण विश्व में शांति, सहकारिता, सहिष्णुता, मानव मात्र के कल्याण की कामना करनेवाले राजा राम मोहन राय निःसन्देह विश्व मानव थे'।[2]

देखा जाए तो, राजा राम मोहन राय राजनीतिज्ञ नहीं थे लेकिन देश में रहते हुए देश की राजनीति से संबंध नहीं है। ऐसा कोई नहीं कह सकता है। वैसे भी परिवार, समाज, देश, राजनीति, विश्व आदि के बीच में गंभीर अंत:संबंध है। उन्होंने समाज को, धर्म को परिष्कृत करने का बीड़ा उठाया तो इससे राष्ट्र को ही लाभ पहुँचा। इसी कारण से उन्हें 'नव भारत का संदेशवाहक' कहा जाता है। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने उन्हें 'भारत के संवैधानिक आंदोलन का जनक' कहा है'।[3] राजा राम मोहन राय के समय में राजनीतिक चेतना का अभाव था। उस समय राय ने प्रेस की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कलकत्ता में उच्चतम न्यायालय तथा बाद में

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

लंदन में प्रिवी काउंसिल को स्मरण पत्र भेजकर नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास किया। उस समय के लिए किसी भारतीय के द्वारा यह किया गया पहला प्रयास था। स्वतन्त्रता मनुष्य की अमूल्य निधि है। देश की स्वतन्त्रता के साथ-साथ राय व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के भी समर्थक थे। राय जी ने माँग की कि, 'किसानों द्वारा दिये जानेवाले अधिकतम लगान को सदा के लिए निश्चित कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने कंपनी की व्यापारिक अधिकारों को खत्म करने तथा भारतीय वस्तुओं पर से भारी निर्यात शुल्कों को हटाने की भी माँग की और उच्च सेवाओं के भारतीकरण, कार्यपालिका और न्यायपालिका को एक दूसरे से अलग करने, जूरी के जरिए मुकद्दमों की सुनवाई और भारतीयों तथा युरोपवासियों के बीच न्यायिक समानता की भी उन्होंने माँग की'।[4]

उनके इन माँगों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना की भावना और भी अधिक बलवती हुई। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त सहयोग की भावना का होना अत्यावश्यक है। यह उनका दृढ़ विश्वास था। उनके इसी विचार से प्रभावित होकर रवीन्द्रनाथ ने लिखा है, 'राम मोहन अपने समय में, संपूर्ण मानव समाज में एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने आधुनिक युग के महत्व को पूरी तरह से समझा। वे जानते थे कि मानव सभ्यता का आदर्श अलग-अलग रहने में नहीं बल्कि चिंतन और क्रिया के सभी क्षेत्रों में व्यक्तियों तथा राष्ट्रों के आपसी भाईचारे में निहित है'।[5]

4. **उपसंहार-** बंगाल केवल एक नाम नहीं है यह भारत को मार्ग दिखानेवाला 'मार्गदर्शक' है और राजा राम मोहन राय इस कड़ी के 'देवदूत'। लेखिका मिसकॉलेट ने राजा साहब की महानतम उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, 'इतिहास में राजा राम मोहन राय का स्थान उस महा सेतु के समान है जिस पर चढ़कर भारतवर्ष अपने अथाह अतीत से अज्ञात भविष्य में प्रवेश करता है'।[6]

5. **संदर्भ सूची**

1. **भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद-500 095, पृष्ठ संख्या-122**

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

2. भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, पृष्ठ संख्या-123-124
3. भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, पृष्ठ संख्या-124
4. भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, पृष्ठ संख्या-124-125
5. भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, पृष्ठ संख्या-125
6. भारतीय साहित्य की अवधारणा, डॉ. शीला मिश्र, पृष्ठ संख्या-125